कुरुक्षेत्र

ग्रामीण विकास
को समर्पित

वर्ष 56 अंक : 11 सितम्बर 2010 मूल्य : 10 रुपये

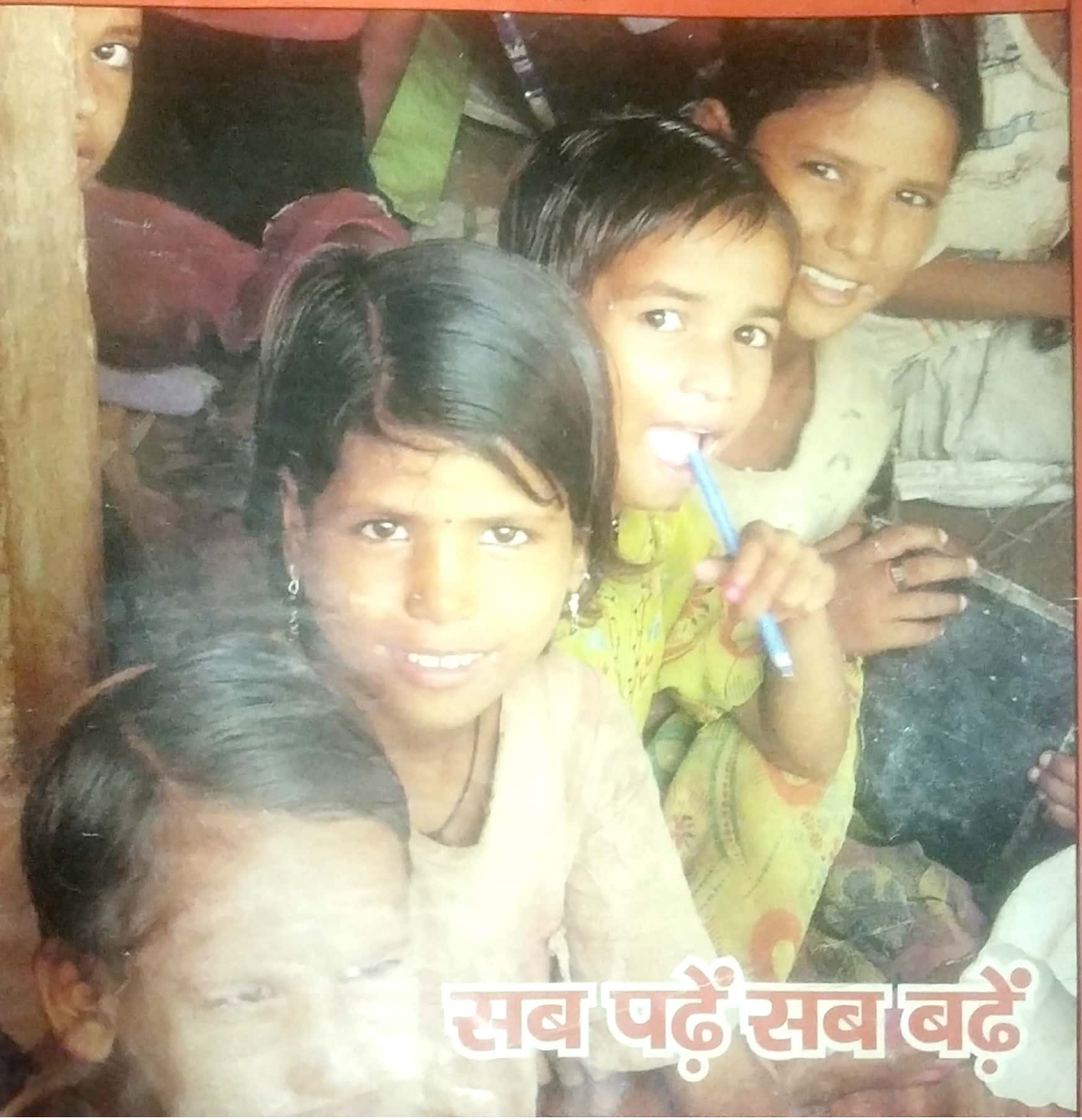

सब पढ़ें सब बढ़ें

Scanned by CamScanner

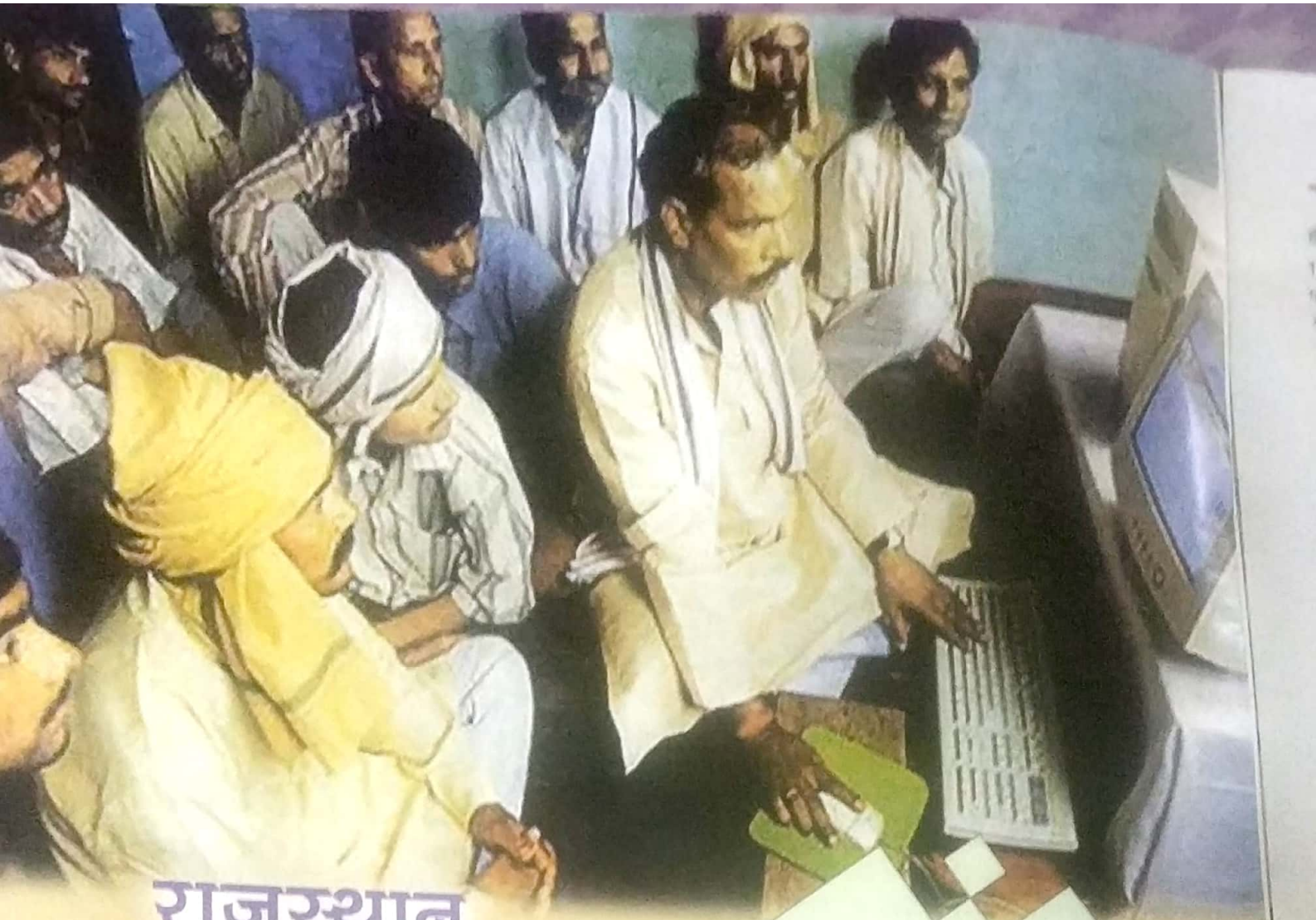

राजस्थान में प्रौढ़ शिक्षा का प्रभाव

डॉ. सुनिता बोहरा

राजस्थान में 1952 में सामुदायिक विकास योजना के तहत राज्य सरकार ने साक्षरता के प्रसार पर विशेष ध्यान दिया। फिर आया लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण जिसकी शुरुआत 2 अक्टूबर, 1956 को हुई। उसके साथ ही राज्य में सामुदायिक विकास केन्द्र के माध्यम से समाज शिक्षा का कार्यक्रम बनाया गया। वास्तव में प्रौढ़ शिक्षा की दिशा में राज्य स्तर पर प्रारम्भ

राजस्थान में जहां 1971 की जनगणना में साक्षरता दर 19.7 प्रतिशत थी वही 2001 की जनगणना में साक्षरता दर 61.03 प्रतिशत तक पहुंच गई। राज्य में 1965 के बाद प्रौढ़ शिक्षा को विशेष महत्व मिला। पांचवीं योजना में राज्य में प्रौढ़ शिक्षा के तहत चलाए गए दो कार्यक्रमों – किसान साक्षरता तथा क्रियात्मक साक्षरता कार्यक्रमों से हजारों किसान लाभान्वित हुए। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों से राज्य के गांवों का आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन व्यापक रूप में प्रभावित हुआ है। इस लेख में लेखिका ने राज्य के जेठन्तरी गांव के संदर्भ में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के प्रभाव से आए बदलाव का जायजा लिया है।

Scanned by CamScanner

होने वाला यह पहला सरकारी प्रयास था। इसके बावजूद भी 1971 की जनगणना के अनुसार राज्य का साक्षरता प्रतिशत 19.7 फीसदी तक ही पहुंच सका था। 2001 की जनगणना के अनुसार वर्तमान में राज्य में साक्षरता दर 61.03 प्रतिशत है, जो कि कोटा में सर्वोच्च व बांसवाड़ा में न्यून है।

1965 में ईरान की राजधानी तेहरान में यूनेस्को के प्रावधान में विश्वभर के शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में साक्षरता प्रसार के तहत प्रौढ़ शिक्षा को उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए विचार–विमर्श किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा के पक्ष में बहुत अच्छा माहौल बना और वियतनाम, क्यूबा और तनजानिया ने पहल करके प्रौढ़ शिक्षा के कार्य को आगे बढ़ाया।

भारत में भी तेहरान सम्मेलन की चर्चा का प्रभाव पड़ा और राजस्थान जैसे राज्यों के विकास में जहां पिछड़ापन और अशिक्षा जैसी समस्याएं व्यापक रूप से फैली थीं, वहां प्रौढ़ शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाने लगा। उधर कोठारी शिक्षा आयोग की सिफारिशों पर जो विचारमंथन हुआ, उसका असर राजस्थान में भी देखा गया।

15–20 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों के लिए राजस्थान में किसान कार्यात्मक साक्षरता की योजना 6 जिलों में – भरतपुर, कोटा, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर और बीकानेर में शुरू की गई है। 15–25 वर्ष की आयु वर्ग के लिए अनौपचारिक शिक्षा नाम से ही प्रौढ़ शिक्षा की योजना राज्य के आठ जिलों में क्रियान्वित हुई। इनमें झुंझुनू, जालोर, बाड़मेर, भीलवाड़ा में केन्द्रीय सहायता से प्रौढ़ शिक्षा को शुरू किया गया। 2 अक्टूबर, 1978 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप राज्य में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम शुरू हुआ और उसी समय प्रौढ़ शिक्षा निर्देशन की स्थापना जयपुर में की गई थी।

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षा समिति के तत्त्वावधान में प्रौढ़ शिक्षा साहित्य के सृजन और प्रौढ़ शिक्षाकर्मियों के प्रशिक्षण हेतु राज्य संदर्भ केन्द्र ने भी प्रौढ़ शिक्षा प्रसार में अपना योगदान दिया।

उच्च शिक्षा केन्द्रों को प्रौढ़ शिक्षा से जोड़ने के लिए अखिल भारतीय स्तर का सम्मेलन जयपुर में आयोजित किया गया और राजस्थान विश्वविद्यालय में सबसे पहले प्रौढ़ एवं सतत् शिक्षा विभाग की स्थापना की गई। इसी तरह बाद में राज्य के कुछ दूसरे विश्वविद्यालयों में प्रौढ़ शिक्षा एवं सतत् शिक्षा विभाग बनने से उच्च शिक्षण संस्थाओं का सीधा जुड़ाव प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में हुआ और कॉलेजों और विश्वविद्यालय के विद्यार्थी एवं शिक्षक वर्ग ने प्रौढ़ शिक्षा जैसे कार्यों में अपना तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के प्रारम्भ हो जाने के बाद नवसाक्षरों के लिए कार्यक्रमों की आवश्यकता थी। अतः राज्य के 18 जिलों में सन् 83–84 से उत्तर साक्षरता केन्द्र स्थापित किए गए। यह केन्द्र 11 राज्यों में केन्द्र द्वारा और 7 राज्यों में राज्य सरकार द्वारा संचालित किए गए।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को सम्पन्न बनाने के लिए राजस्थान में जागृति लाने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने की जरूरत महसूस की गई और उपयोगिता बनाने के लिए यहां के लोक माध्यमों का सहारा लिया गया। इसका प्रभाव यह हुआ कि राज्य एवं शहरों का प्रौढ़ समाज भी प्रौढ़ शिक्षा के प्रति आकर्षित हुआ।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के जिला स्तर में अनुदेशक स्तर के कार्यक्रम को अनेक राष्ट्रीय विकास योजनाओं में महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रस्तुत किया गया। उसमें अनेक उदाहरण तो बहुत अनुकरणीय बने।

नागौर जिले के सोलियाना गांव का एक निरक्षर प्रौढ़ पढ़कर सरपंच के पद पर पहुंच गया। इसी प्रकार अजमेर के गांव बबेसी में तो जागृति केन्द्र पर आने वाली महिलाओं में तो इतनी जागृति आयी कि उन्होंने सहकारी समिति का गठन कर लिया। इसी प्रकार प्रौढ़ शिक्षा के कार्य को समाज के विभिन्न स्तरों पर समर्थन हासिल हुआ। इतना ही नहीं ग्रामवासियों के मन में उस केन्द्र के प्रति स्पर्द्धा व जागृति पनपने लगी।

स्वतंत्रता के बाद में राज्य में प्रथम पंचवर्षीय योजना में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम समाज शिक्षा के अन्तर्गत चलाया गया था। केवल पांचवी योजना में प्रौढ़ शिक्षा के तहत दो कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए–किसान साक्षरता तथा क्रियात्मक साक्षरता कार्यक्रम। किसान साक्षरता की योजना उदयपुर, कोटा, जयपुर तथा भरतपुर जिलों में चलाई गई। बाद में जोधपुर और बीकानेर को भी शामिल कर लिया गया। प्रत्येक जिले में 80 केन्द्र स्वीकृत थे और प्रत्येक केन्द्र पर 30 प्रौढ़ों के शिक्षित होने की व्यवस्था की गई। इस योजना से हजारों किसानों को लाभ हुआ। प्राथमिक प्रौढ़ शिक्षा क्षेत्र में राजस्थान जैसे पिछड़े राज्य में यह बड़ी उपलब्धि थी। ठीक इसी प्रकार क्रियात्मक साक्षरता कार्यक्रम में गैर–सरकारी स्वैच्छिक संस्थाओं का सहयोग लिया गया।

प्रौढ़ शिक्षा के प्रयास तथा महत्व को देखते हुए राजस्थान सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा योजना के क्रियान्वयन और समन्वय के लिए एक अलग विभाग स्थापित किया। 3 अक्टूबर, 1978 को राजस्थान में प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय स्थापित किया गया। छह प्रमुख नगरों में जिलों में प्रौढ़ शिक्षा अधिकारियों के पद भी निर्धारित किए गए और शेष जिलों में प्रौढ़ शिक्षा परियोजना अधिकारियों की नियुक्ति की गई थी।

इसका प्रभाव यह हुआ कि राजस्थान के लगभग सभी जिलों में सरकार ने प्रौढ़ शिक्षा का एक ढांचा खड़ा कर दिया और

Scanned by CamScanner

अनेक गैर–सरकारी संस्थाओं की भागीदारी से प्रौढ़ शिक्षा का व्यापक कार्यक्रम चलाया गया।

साक्षरता अभियान का लक्ष्य एवं उद्देश्य

- सम्पूर्ण साक्षरता कार्यक्रम निरक्षरता को मिटाने एवं साक्षरता लक्ष्य प्राप्ति का एक प्रमुख अभियान है जिसमें जन–समुदाय, सरकारी और गैर–सरकारी एवं स्वैच्छिक संस्थाओं की भागीदारी प्राप्त करने पर बल दिया जाना अपेक्षित है।
- साक्षरता कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व वातावरण निर्मित करना, 6–14 आयु वर्ग के शिक्षार्थियों की शिक्षा सुनिश्चित करना, 16–35 आयु वर्ग के सभी निरक्षर व्यक्तियों को क्रियात्मक साक्षरता प्रदान करना।
- राष्ट्रीय सरकारी कार्यक्रमों यथा महिला उत्थान, जनसंख्या सीमित रखने, पर्यावरण आदि के प्रति जनचेतना जागृत करना।
- इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह है कि सभी व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से आत्मनिर्भरता एवं स्वावलम्बन प्राप्त कर सकें, वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपना सकें, एकता व भाईचारे की भावना का विकास कर सकें।
- कमजोर वर्ग एवं महिलाओं को ज्ञान एवं कर्म से समर्थ बना सकें, कमजोर वर्ग एवं महिलाओं को जागरूक करना। विकास कार्यक्रमों की पहुंच जन–जन तक पहुंच सके। राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को प्रेरित कर सके।
- सम्पूर्ण साक्षरता एवं उत्तर साक्षरता के लक्ष्य प्राप्त कर सके और जन–जन भी भागीदारी प्राप्त कर सके।

प्रौढ़ शिक्षा मिशन

15 से 35 वर्ष आयु के पर्यवेक्षकों को पढ़ने–लिखने का कार्य ग्रहण करने के लिए 1989 मिशन गठित किया गया। इस मिशन के तहत देश में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों को एक अभियान के रूप में संचालित किया गया। केरल के एर्नाकुलम जिले में मिली सफलता के बाद सभी ने प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में अभियान प्रणाली को स्वीकार कर लिया। मिशन के माध्यम से साक्षरता, उत्तर साक्षरता, सतत् शिक्षा कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। सतत् शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से देश में प्रौढ़ शिक्षा का व्यापक फैलाव किया जा रहा है। इससे न केवल साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा है बल्कि कार्यात्मक साक्षरता व अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छा वातावरण बना है।

जेठन्तरी गांव एक परिचय

जेठन्तरी गांव हनुमानजी मन्दिर के चारों ओर बसा हुआ है। गांव की कुल जनसंख्या 4388 है जिसमें पुरुष जनसंख्या 2223 है तथा स्त्रियों की कुल संख्या 2165 है। गांव में पुरुष–महिला लिंगानुपात 1000–975 है।

ग्राम साक्षरता समिति

गांव में ग्रामीणों की ही एक साक्षरता समिति बनाई गई है जो सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली शैक्षणिक सुविधाओं को गांव तक लाने का कार्य करती है। इसके अन्तर्गत गांव में संचालित विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं का निरीक्षण किया जाता है। गांव की साक्षरता समिति पर उनका बाह्य रूप से पूर्व दबाव बनाया हुआ है।

Scanned by CamScanner

शिक्षण संस्थाएं

गांव में एक माध्यमिक विद्यालय तथा दो उच्च प्राथमिक एवं सात प्राथमिक विद्यालय हैं जिसमें एक संस्कृत प्राथमिक विद्यालय भी शामिल है। माध्यमिक विद्यालय में 544 छात्र व छात्राएं हैं। इनमें छात्राओं की संख्या कम है। माध्यमिक स्तर पर कुल 92 छात्राएं है एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्राओं की संख्या काफी अच्छी है। गांव में अक्सर बालिकाओं को उच्च प्राथमिक स्तर तक ही पढ़ाते हैं। तत्पश्चात् उनकी शादी कर दी जाती है। गांव में एक गैर–सरकारी अंग्रेजी माध्यम का प्राथमिक विद्यालय है जिसमें अंग्रेजी शिक्षा का काफी अच्छा स्तर है।

जो लोग स्कूली शिक्षा से वंचित रह जाते हैं या रह गए हैं उनको साक्षर करने के लिए अनेक शैक्षणिक संस्थाएं कार्यरत हैं यथा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र एवं अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र कार्यरत हैं।

संचार के साधन

जेठन्तरी गांव में साक्षरता के माध्यम से जो क्रान्ति हुई है उसी के परिणामस्वरूप लोग जागरूक हुए हैं जिससे लोगों में संचार के प्रति जागरुकता है। यथा गांव में टेलीफोन, डाक तार विभाग आदि का तेजी से विकास हुआ है। लोग समाचार जानने के लिए विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं तथा रेडियो, टेलीविजन आदि का उपयोग कर रहे हैं जिससे लोगों में आधुनिक जीवन के प्रति रुचि बढ़ी है। संचार के माध्यम से लोग राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, देश–विदेश आदि की खबरों का ध्यान रखने लगे हैं। यथा गांव में काफी घरों में टेलीफोन सुविधा है तथा गांव में अनेक एस.टी. डी, पी.सी.ओ. हैं।

यातायात के साधन

यहां पर आने–जाने के लिए अनेक यातायात के साधन हैं। यहां मुख्य रूप से दो मार्ग महत्वपूर्ण है। एक रेलमार्ग तथा दूसरा सड़क मार्ग।

रेलमार्ग – रेलमार्ग पश्चिम में बालोतरा तथा बाड़मेर के लिए खुला है तथा पूर्व की ओर समदड़ी, लूणी, जोधपुर तक की यात्रा की जा सकती है।

सड़क मार्ग – सड़क मार्ग मुख्य रूप से समदड़ी, बालोतरा, पाल, जोधपुर आदि को मिलाता है। यह सड़क मार्ग राष्ट्रीय मार्ग न होते हुए भी अनेक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहां पर यातायात हमेशा खुला रहता है। इसके अलावा लोगों के निजी वाहन भी हैं जिनमें जीप, कार, ट्रक, ट्रेक्टर, मोटरसाइकिल आदि मुख्य हैं।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम शुरुआती दौर

सर्वप्रथम जेठन्तरी गांव में साक्षरता मिशन के अन्तर्गत सन् 1995 में प्रयास किए गए थे। प्रारम्भिक दौर में लोगों ने इस कार्यक्रम को अधिक महत्व नहीं दिया लेकिन धीरे–धीरे साक्षरता कार्यक्रम को महत्व मिलने लगा।

साक्षरता कार्यक्रम वर्तमान में

साक्षरता कार्यक्रम का जेठन्तरी गांव पर काफी अच्छा असर पड़ा है। राष्ट्रीय एवं राज्य–स्तरीय साक्षरता संस्थाएं लोगों को साक्षर करने में अभी भी जुटी हुई हैं। साक्षरता कार्यक्रम के प्रयासों से गांव की वर्तमान साक्षरता स्थिति 91 प्रतिशत है।

वर्तमान में गांव में उत्तर साक्षरता का दौर खत्म हो चुका है तथा सतत् शिक्षा का कार्यक्रम शुरू हो चुका है। इसके अन्तर्गत गांव में परिस्थितिवश जो साक्षर होने से रह गए हैं उनको साक्षर करने का कार्य चल रहा है। साक्षरता की स्थिति को देखकर यह महसूस किया जा रहा है कि गांव सतत् शिक्षा के अन्तर्गत पूर्ण साक्षरता का दर्जा हासिल कर लेगा। वर्तमान में साक्षरता कार्य युद्ध स्तर पर किया जा रहा है।

प्रौढ़ शिक्षा का महत्व कब और क्यों?

सन् 1995 से पहले प्रौढ़ शिक्षा का इतना महत्व नहीं था। 1995 के बाद जेठन्तरी गांव में प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा गांव की ही एक महिला जमनादेवी के बूते पर मिला। जमना देवी हर काम में निपुण थी पर अनपढ़ थी। जब उसके बच्चों ने पढ़ाई की शुरुआत की तब आए दिन उसके बच्चों की शिकायत उसे सुनने को मिलती थी कि उसके बच्चे पढ़ाई में बहुत ही कमजोर हैं तब उसको आभास हुआ कि अगर मैं पढ़ी–लिखी होती तो आज मुझे अपने बच्चों की शिकायत सुनने को नहीं मिलती। इसके समाधान के लिए बच्चों के अध्यापक से मिली अपनी समस्या से अवगत कराया कि मैं अनपढ़ हूं पर अपने बच्चों को आगे बढ़ाना चाहती हूं। तभी स्कूल के अध्यापक ने उसे यही सलाह दी कि अभी भी कोई देर नहीं हुई है। शाम को तुम प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र जाकर पढ़कर अपने बच्चों को पढ़ा सकती हो। वह दिन में खेतीबाड़ी का काम संभालती, शाम को प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र जाकर पढ़ती, बाद में अपने बच्चों को पढ़ाती। आज उसके बच्चे पढ़–लिख कर अच्छे पद पर कार्यरत हैं। जमनादेवी से प्रभावित होकर गांव के कई लोगों ने प्रौढ़ शिक्षा की ओर कदम बढ़ाया।

जेठन्तरी गांव में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र

जेठन्तरी गांव में कुल चार प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र हैं :
1. सतत् शिक्षा समिति केन्द्र, 2. प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, 3. जनजागरण प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, 4 विद्याभारती प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र।

Scanned by CamScanner

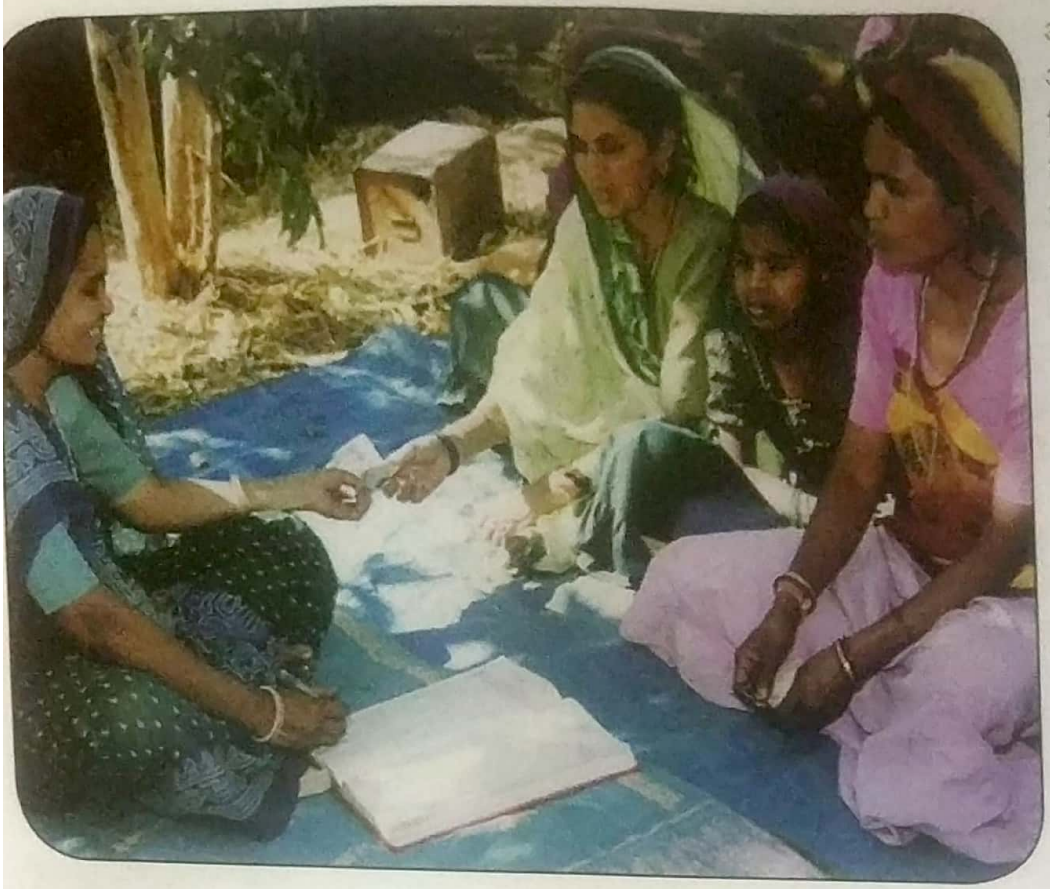

जेठन्तरी गांव में वर्तमान में प्रौढ़ शिक्षा से लाभान्वित कुल व्यक्ति

सर्वे करने पर यह तथ्य भी सामने आया है कि गांव में कुछ लोगों का शिक्षा स्तर निम्न है। इसका कारण यह है कि जो लोग मजदूरी के लिए दिन भर खेती और अन्य दूसरे कार्यों में लगे रहते है शाम का समय जो उनके पास बचता है वे उस समय को चौपाल या अन्य कार्य में बिताते हैं। उनके लिए सायंकालीन प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों का आयोजन किया गया है। लेकिन ये लोग अपने आलस्य के कारण कभी–कभी ही प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र जाते हैं। इससे शिक्षा का स्तर प्रभावित होता है।

निम्न शिक्षा का दूसरा कारण यह है कि सरकार के द्वारा गांवों में जो निःशुल्क किताबें दी जाती हैं वे उन तक पूरी नहीं पहुंच पाती। जिससे उन्हें बाधाएं आती हैं और वे शिक्षा से अपना मुंह मोड़ लेते हैं। एक अन्य कारण यह भी है कि कुछ लोग शिक्षा में रुचि नहीं लेते हैं। निम्न शिक्षा दर होने के कारण गांव के विकास में थोड़ी कठिनाईयां आ रही हैं।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का प्रभाव

जेठन्तरी गांव में साक्षरता मिशन का काफी गहरा प्रभाव पड़ा है। लोग ग्रामीण परिवेश से निकलकर एक नये समाज की ओर अग्रसर हो रहे हैं। लोग शिक्षा का महत्व समझने लगे हैं। एक ओर समाज की रूढ़िवादिता, अन्धविश्वास आदि से बाहर निकल कर एक साथ सभी शिक्षित होने का सपना मन में उतार कर शिक्षित होने लगे हैं वहीं औरतें अपनी पर्दा प्रथा आदि से बाहर निकलकर सामूहिक रूप से पढ़ने–लिखने के लिए खुलकर सामने आ रही हैं। गांव में बालिकाओं को शिक्षित करने को काफी बढ़–चढ़ कर महत्व मिल रहा है। शिक्षा का प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है यथा सामाजिक व्यक्तिगत जीवन, आर्थिक जीवन, राजनीतिक जीवन तथा सांस्कृतिक जीवन।

सामाजिक प्रभाव

प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से गांव में काफी परिवर्तन आया है एवं नये विचारों का विकास हुआ है। यथा गांव में जातिवाद में कमी आई है जिससे लोग जातिवाद से ऊपर उठकर सभी के हित के लिए सोचने लगे हैं। लोग धर्मनिरपेक्षता को समझने लगे हैं। समाज में फैली कुरीतियों के प्रति जागरूक हुए हैं। अब अन्धविश्वास, जादू–टोनों के जाल से बाहर निकलकर आधुनिक चिकित्सा पर विश्वास करने लगे हैं। साक्षरता के कारण ही लोग परिवार नियोजन पर विश्वास करने लगे हैं, दहेज का विरोध करने लगे हैं, मृत्यु भोज भी कम होने लगे हैं। लोगों ने बाल विवाह को भी अवैध ठहराया है। बुजुर्ग लोग अपनी भूल सुधारने के लिए समय पर नई पीढ़ी को स्कूल भेज रहे हैं एवं जहां तक संभव हो, उच्च शिक्षा भी प्रदान करवा रहे हैं।

आर्थिक प्रभाव

प्रौढ़ साक्षरता मिशन का प्रभाव हमें आर्थिक जीवन पर विभिन्न क्षेत्रों में देखने को मिलता है। वर्तमान में लोगों का आर्थिक जीवन–स्तर उच्च होने लगा है। लोग साहूकार के बजाय विभिन्न बैंकों से ऋण लेते हैं। लोग अपना हिसाब खुद रखने लगे हैं। साक्षरता की वजह से लोग अपने अनाज के भावों के बारे में भी समझने लगे हैं। पहले नाममात्र भाव पर अपने ही गांव के किसी सेठ अथवा साहूकार को बेच देते थे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए लोग मजदूरी के लिए शहरों में काम

Scanned by CamScanner

करने जाने लगे हैं। लोग उत्तम बीज का उपयोग करने लगे हैं तथा नई वैज्ञानिक पद्धति से कृषि कार्य को सम्पादित करने लगे हैं जिससे उनकी आर्थिक स्थिति काफी अच्छी हुई है।

राजनीतिक प्रभाव

प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम से पहले राजनीति के प्रति लोग अचेत थे। वे नेता अथवा सरकार से कोई वास्ता नहीं रखते थे। लेकिन आज यह स्थिति नहीं है। लोग अपने नेता को स्वयं ही अपने स्वविवेक से मतदान करते हैं। पहले वे किसी के बहकावे में आकर मतदान कर देते थे। वर्तमान में लोग राजनीति में बढ़–चढ़कर भाग लेने लगे हैं। लोगों में राजनीति के प्रति नई चेतना का संचार हुआ है। आज लोग अपनी पसन्द के मुताबिक सही नेता का चुनाव करते हैं तथा भ्रष्ट नेता को वही पर मात दे देते हैं। वर्तमान में गांव के लोग भी चुनाव मैदान में खड़े होने लगे हैं जबकि पूर्व में ऐसा नहीं था। अब लोग प्रत्येक राजनीतिक गतिविधियों का ध्यान रखते हैं तथा किसी भी गलत गतिविधि पर अंकुश लगाने के लिए अंगुली भी उठाते रहते हैं। सरकार पर दबाव भी बनाये रखते हैं।

सांस्कृतिक प्रभाव

शिक्षा और संस्कृति का घनिष्ठ संबंध है। शिक्षित मनुष्य अच्छे सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं। इतिहास गवाह है कि शिक्षित वर्ग ने ही अच्छी और सफल संस्कृतियों का निर्माण किया है। इसी के फलस्वरूप गांव जेठन्तरी भी शिक्षा की अलख जगने के कारण अच्छा सांस्कृतिक वातावरण बनने की ओर अग्रसर है। लोग अंधेरे को पार कर उजाले की ओर बढ़ रहे हैं।

निष्कर्ष

समाज सेवक हो या राजनीतिज्ञ, व्यवसायी हो या धर्माचार्य, किसान हो या मजदूर इन सबके लिए शिक्षा बहुत जरूरी है। गांव में सभी लोग पढ़े चाहे वह बुजुर्ग ही क्यों न हो। इसके लिए जरूरी है कि वे मन से एक दृढ़ निश्चय कर लें कि हमें पढ़ना ही है, तभी वे सफल हो सकेंगे। गांव में जो सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालय हैं यदि उनमें शिक्षक समय पर आएंगे तो साक्षरता स्तर में जरूर परिवर्तन आएगा। गांव में ज्यादा से ज्यादा निःशुल्क पुस्तकों की व्यवस्था की जाए। प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र के अलावा अन्य संस्था की व्यवस्था की जाए। ग्रीष्मकालीन अवकाश में विद्यालयों द्वारा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का प्रचार–प्रसार करना चाहिए। महिलाओं के लिए भी अलग से व्यवस्था की जानी चाहिए।

जेठन्तरी गांव में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र का विकास होने के कारण यहां पर विभिन्न महिलाओं व पुरुषों ने इन केन्द्रों में अपना दाखिला कराकर पूरे गांव को शिक्षा की ओर अग्रसर किया है। महिलाओं व पुरुषों के इन केन्द्रों में दाखिल होने के कारण गांव के बालक– बालिकाएं भी खुशी के साथ वहां जाने के लिए तैयार होने लगे हैं।

इन प्रौढ़ शिक्षा व सतत् शिक्षा केन्द्रों के कारण आज जेठन्तरी गांव में भी अशिक्षित लोगों की बजाय शिक्षित लोग अधिक हैं। अतः जेठन्तरी गांव में शिक्षा की स्थिति में सुधार आया है। वहां के महिला–पुरुष शिक्षा को अधिक महत्व देने लगे हैं तथा उनकी सोच में परिवर्तन आया है।

(लेखिका महिला पीजी महाविद्यालय जोधपुर में समाजशास्त्र की प्रवक्ता हैं।)

सदस्यता कूपन

मैं/हम **कुरुक्षेत्र** का नियमित ग्राहक बनना चाहता हूं/चाहती हूं/चाहते हैं।

शुल्क : एक वर्ष के लिए 100 रुपये, दो वर्ष के लिए 180 रुपये, तीन वर्ष के लिए 250 रुपये का

(जो लागू नहीं होता, उसे कृपया काट दें)

डिमांड ड्राफ्ट/भारतीय पोस्टल आर्डर क्रमांक ..... दिनांक ..... संलग्न है।

कृपया ध्यान रखें, आपका डिमांड ड्राफ्ट/भारतीय पोस्टल आर्डर निदेशक, प्रकाशन विभाग को नई दिल्ली में देय हो।

नाम (स्पष्ट अक्षरों में) .....

पता .....

..... पिन .....

इस कूपन को काटिए और शुल्क सहित इस पते पर भेजिए :

विज्ञापन और प्रसार प्रबंधक

प्रकाशन विभाग, पूर्वी खंड–4, तल–7, रामकृष्णपुरम,

नई दिल्ली–110 066

Scanned by CamScanner